सामाजिक स्तरीकरण की विशेषताएँ

भिन्नता रहित समाज की स्थापना सम्भव नहीं क्योंकि सामाजिक संरचना का निर्माण विभिन्न, उच्च एवं निम्न प्रस्थितियों से होता है। इन प्रस्थितियों पर विभिन्न व्यक्तियों को बैठाकर उनसे कार्य लेना पड़ता है। विभिन्न प्रस्थितियों को धारण करने के लिए भिन्न-भिन्न योग्यता वाले व्यक्तियों की आवश्यकता होती है और पदों के अनुरूप कार्य करने की प्रेरणा भी लोगों को देनी होती है। इसके लिए समाज में स्तरीकरण को जन्म देना होता है। अर्थात स्तरीकरण लोगों को पद प्राप्त करने एवं उनके अव अनुरूप भूमिका निभाने की प्रेरणा देता है।

जब किसी समाज में विभिन्न पद हों और उनसे सम्बन्धित अधिकारों एवं पुरस्कारों में असमानता हो तो समाज में स्तरीकरण पैदा होना स्वाभाविक है। स्तरीकरण के द्वारा समाज यह विश्वास दिलाता है कि सबसे अधिक महत्वपूर्ण पदों पर योग्य व्यक्तियों को रखा जायेगा। इस प्रकार व्यक्तियों में निहित योग्यता एवं बुद्धि की भिन्नता को समाज संस्थात्मक रूप दे देता है।

सामाजिक स्तरीकरण के विशेषताओं का ट्यूमिन ने उल्लेख किया है जो निम्नलिखित है:—

(1) सामाजिक स्तरीकरण की प्रकृति सामाजिक है:—

सामाजिक स्तरीकरण कुछ व्यक्तियों तक ही सीमित नहीं होता वरन् सम्पूर्ण समाज में व्याप्त होता है। समाज के सभी लोग समान मूल्यों एवं व्यवहार के समान प्रतिमानों को स्वीकार करते हैं। सामाजिक स्तरीकरण को आयु, रंग, एवं यौन भेद के आधार पर ही नहीं वरन समाज में व्यक्तियों को प्राप्त विभिन्न पदों एवं प्रस्थितियों के आधार पर भी समझा जा सकता है। समाजीकरण के द्वारा व्यक्ति सामाजिक मानदण्डों को सीखता है और अचेतन रूप में स्तरीकरण को स्वीकार करता है। सामाजिक संस्थाएँ जैसे- धर्म, शिक्षा, परिवार, विवाह एवं राजनीति, आदि भी समाज में स्तरीकरण उत्पन्न करती है।

(2) सामाजिक स्तरीकरण पुरातन है — स्तरीकरण समाज में अति प्राचीन काल से ही विद्यमान रहा है। प्राचीन समय में इसके आधार आयु, लिंग, शारीरिक शक्ति, जन्म, आदि प्रबल गुण थे तो वर्तमान समय में अर्जित गुणों का अधिक महत्व है, मार्क्स की मान्यता है कि प्रत्येक युग में समाज में दो वर्ग रहे हैं- एक श्रमिक और दूसरा पूंजीपति। इस प्रकार का स्तरीकरण प्रत्येक समाज में सदैव ही विद्यमान रहा है।

(3) सार्वभौमिकता → आदिकाल से लेकर आज तक कोई ऐसा समाज नहीं पाया गया जिसमें स्तरीकरण न हो। इसके आधारों एवं स्वरूपों में अन्तर हो सकता है किन्तु सामाजिक स्तरीकरण सर्वत्र ही विद्यमान रहा है।

(4) सामाजिक स्तरीकरण के विभिन्न स्वरूप हैं — विश्व के सभी समाजों और सभी कालों में सामाजिक स्तरीकरण का समान स्वरूप नहीं रहा है वरन देश एवं काल के अनुसार इसके अनेक स्वरूप देखे जा सकते हैं। अति प्राचीन काल में सामाजिक स्तरीकरण का सरलतम आधार यौन-भेद, आयु-भेद, और शारीरिक शक्ति था। भारत में जाति-प्रथा के आधार पर स्तरीकरण पाया जाता है तो यूरोप में वर्ग व्यवस्था एवं अर्जित गुणों को अधिक महत्व दिया गया है। मध्य युग में दास एवं स्वामी स्तरीकरण के दो प्रमुख स्वरूप रहे हैं। अफ्रीका एवं अमरीका में प्रजाति भेदभाव का लम्बे समय से प्रचलन रहा है। इस प्रकार सभी समाजों में स्तरीकरण का प्रचलन कुछ ही सामान्य नियमों द्वारा न होकर स्थान, परिस्थिति एवं संस्कृति द्वारा प्रभावित रहा है।

Notes 18 Sunday

(5) सामाजिक स्तरीकरण परिणामिक है:—

ट्यूमिन कहते हैं कि सामाजिक स्तरीकरण परिणामिक है। यह समाज में असमानता उत्पन्न करता है। इस असमानता को हम जीवन जीने के अवसर तथा जीवन शैली में देख सकते है। प्रत्येक व्यक्ति के जीवन जीने के अवसर एवं शैली स्तरीकरण के स्वरूपों के आधार पर भिन्न-भिन्न होते है। किसी व्यक्ति को कितनी शक्ति, सम्पत्ति एवं मानसिक सन्तोष प्राप्त होगा, यह समाज में उसके स्तर पर निर्भर है। विभिन्न स्तरों में मृत्यु-दर, लम्बी आयु, शारीरिक एवं मानसिक रोग, सन्तानों की संख्या, वैवाहिक संघर्ष, तलाक, पृथकता, आदि की मात्रा में भिन्नता पायी जाती है। एक व्यक्ति किस प्रकार के मकान एवं पड़ौस में रहेगा, किस प्रकार के मनोरंजन के साधन अपनायेगा, माता-पिता से उसके सम्बन्ध कैसे होंगे, किस प्रकार की शिक्षा एवं पुस्तकों का वह प्रयोग करेगा, यह उसके सामाजिक स्तर पर निर्भर करता है। प्रत्येक स्तर के जीवन अवसर एवं शैली में भिन्नता पायी जाती है।

ट्यूमिन की मान्यता है कि ये पांच विशेषताएं ऐसी हैं जिनके आधार पर समाज में स्तरीकरण के अध्ययन के महत्व को सिद्ध किया जा सकता है।

⇒ सामाजिक स्तरीकरण का महत्व / प्रकार्य:—

सामाजिक स्तरीकरण सार्वभौमिक तथ्य है। इसका कोई-न-कोई रूप सभी समाजों एवं कालों में पाया जाता रहा है, इसी से इसका महत्व एवं उपयोगिता प्रकट होती है। प्रत्येक समाज में पदों के महत्व में अन्तर होने एवं व्यक्तियों की योग्यता, बुद्धि एवं कुशलता में भेद होने के कारण कुछ व्यक्ति प्रगति कर जाते हैं और कुछ पिछड़ जाते है। इस कारण समाज में स्वतः ही स्तरीकरण पैदा हो जाता है। व्यक्ति एवं समाज के लिए स्तरीकरण का महत्व इस प्रकार है:—